IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 3, Issue 2, October 2023
Impact Factor: 7.301

ग्रामीण विकास में कृषि का योगदान:एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ॰ गौरव त्रिपाठी

असिस्टेंट प्रोफेसर -राजनीति विज्ञान

राजकीय पी जी कालेज, मुसाफिरखाना-अमेठी

सारांश

भारत एक कृषि प्रधान देश है जहां अधिकांश ग्रामीण आबादी अपनी आजीविका के लिए कृषि क्षेत्र पर निर्भर करती है इसलिए कृषि का विकास सीधे तौर पर ग्रामीण विकास से जुड़ा हुआ है यद्यपि समय के साथ सकल घरेलू उत्पाद में कृषि का योगदान घटा है फिर भी रोजगार और ग्रामीण अर्थव्यवस्था के लिए इसका महत्व आज भीअत्यधिक है

ग्रामीण विकास का आशय ग्रामीण लोगों की जीवन स्तर में समग्र सुधार से है जिसमें आय, रोजगार ,शिक्षा, और आधारभूत सुविधाओं का विकास शामिल है कृषि उत्पादन में वृद्धि से ग्रामीण क्षेत्रों में आय और रोजगार के अवसर बढ़ते हैं तथा गरीबी में कमी आती है

हालांकि कृषि क्षेत्र को परंपरागत खेती संसाधनों की कमी निम्न उत्पादकता जलवायु परिवर्तन और भंडारण सुविधाओं के अभाव जैसी कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है इन समस्याओं के समाधान के लिए सरकार द्वारा विभिन्न योजनाएं और नीतिगत प्रयास किए जा रहे हैं

अतः स्पष्ट है कि कृषि का सुदृढ़ विकास ही ग्रामीण भारत की आर्थिक प्रगति और समग्र ग्रामीण विकास का आधार है

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 3, Issue 2, October 2023
Impact Factor: 7.301